वाराणसी जनपद के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के मूल्य आधारित अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

जे.पी. श्रीवास्तव*

*प्राचार्य, इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन, नीबियॉ, बच्छाँव, वाराणसी

Contact : drjpshepa@yahoo.co.in

सारांश

मूल्य व्यक्ति के वे आदर्श, विश्वास या मानक है जो उसके जीवन चक्र को निर्देशित करते हैं। मूल्य व्यक्ति को सही–गलत, अच्छा–बुरा एवं करणीय–अकरणीय का निर्णय करने में सहायता करते हैं। वैज्ञानिक प्रगति, प्रौद्योगिकी विकास, अर्थ प्रधानता के कारण मूल्यों के सन्दर्भ में अनेक प्रश्न चिन्ह खड़े हो गए हैं। प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन वस्तुपरक ढंग से करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दावली : उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मूल्य, अभिवृत्ति, सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक , धार्मिक।

प्रस्तावना

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में जो मूल्य बताए गए हैं उन्हें शिक्षा द्वारा ही छात्रों के जीवन में उतारा जा सकता है। वे मूल्य हैं–प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, न्याय, सहिष्णुता, व्यक्ति का विचार, अभिव्यक्ति आदि। ईमानदारी, उपकार, विनम्रता, निःस्वार्थता, समभाव, मन, वचन कर्म की एकता के गुण–इन्हीं मूल्यों को अपने छात्रों के जीवन में उतारना है। वर्तमान समय के मूल्यों को बताने के लिए मात्र उपदेश ही पर्याप्त साधन माना जाता है। इसमें अनुभूति, चिन्तन तथा क्रियान्विति नहीं है।

विज्ञान और तकनीकी के विस्तार के साथ विवेक और बुद्धि का संकुचन हो रहा है। ज्ञान बढ़ रहा है और व्यक्तित्व का पतन हो रहा है। इस प्रकार ज्ञान और विवेक का असन्तुलन हो गया है। आज आधे से ज्यादा वैज्ञानिक और इंजीनियर सहायक यंत्रों का निर्माण कर रहे हैं। जिससे हिंसात्मक ताण्डव नृत्य पारस्परिक शत्रुता, घृणा, मारकाट फैली है। इन सबको सही दिशा शिक्षा ही दे सकती है इसलिए हमें विद्यालयों में संयम तथा सामाजिक व नैतिक मूल्यों का सृजन आवश्यक है।

मूल्य व्यक्ति के वे आदर्श, विश्वास या मानक है जो उसके जीवन चक्र को निर्देशित करते हैं। मूल्य व्यक्ति को सही–गलत, अच्छा–बुरा एवं करणीय–अकरणीय का निर्णय करने में सहायता करते हैं। वैज्ञानिक प्रगति, प्रौद्योगिकी विकास, अर्थ प्रधानता के कारण मूल्यों के सन्दर्भ में अनेक प्रश्न चिन्ह खड़े हो गए हैं। आधुनिक मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि व्यक्ति के बाल एवं किशोर काल की शिक्षा उसके सम्पूर्ण जीवन को एक निर्दिष्ट दिशा प्रदान करती है। इस अवस्था में व्यक्ति में जिन आदतों तथा अभिरूचियों का निर्माण हो जाता है, वे जीवन पर्यंत विद्यमान रहती हैं। अतः प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर दी हुई शिक्षा का बालक पर अमिट प्रभाव पड़ता है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है जिसके अर्न्तगत शारीरिक, मानसिक और बौद्विक विकास के साथ–साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास भी आ जाता है। नैतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए हमारा ध्यान स्वाभाविक रूप से उन जीवन–मूल्यों की ओर जाता है जो व्यक्ति को अच्छा मानव एवं अच्छा नागरिक बनाने में सक्षम हों। सुख प्राप्त करने की कल्पना के पीछे दौड़ने, आधुनिकता के मोह, मूल्यों की अस्पष्ट समझ तथा उनकी उपयोगिता में अविश्वास आदि के कारण बालकों का मनोबल निरन्तर गिरता जा रहा है। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में शिक्षा द्वारा मूल्यों को सुरक्षित तथा विकसित करने के प्रयत्न आवश्यक है।

मूल्यों के विकास में परिवार, विद्यालय, समुदाय एवं राज्य का योगदान रहता है परन्तु शिक्षा का औपचारिक अभिकरण विद्यालय का इस कार्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहता है अतः बालक को विद्यालय में समस्त मूल्यों की शिक्षा उचित प्रकार से दी जानी चाहिए। परन्तु मूल्यों का विकास करने से पहले यह जानना आवश्यक है कि छात्रों में कौन सा मूल्य किस मात्रा में विद्यमान है यह ज्ञात होने पर ही हम यह निर्णय कर सकते हैं कि कौन सा मूल्य छात्रों में संतुलित मात्रा में विद्यमान है तथा कौन सा नहीं, एवं किस मूल्यों को उसी स्तर पर बनाये रखना है तथा किस मूल्य का विकास किया जाना शेष है।

उद्देश्य

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पना

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन की सीमाएँ

क. प्रस्तुत अध्ययन के लिए वाराणसी जनपद के पॉच उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।

ख. इस अध्ययन के लिए जिन उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया हैं वे सभी माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।

ग. इस अध्ययन हेतु कक्षा 12वीं के छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है, जिसमें 50 छात्र एवं 50 छात्राएँ हैं।

घ. इस अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी दोनों विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

सम्बन्धित शोध साहित्य का सर्वेक्षण

सिंह, एल0सी0 (1986), ''बी0एड0 के विद्यार्थियों में मूल्योन्मुखता में मूल्य स्पष्टीकरण के उपायों की प्रभावशीलता'', एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।

इस शोध में बी0एड0 के विद्यार्थियों में मूल्योन्मूखता का विकास करने के लिए उपयुक्त मूल्य स्पष्टीकरण उपायों की जॉच, मूल्य स्पष्टीकरण उपायों की प्रभावशीलता और मूल्य शिक्षा की परम्परागत विधियों की तुलना करके की गई हैं। अध्ययन के निष्कर्षो से पता चला कि कुल मिलाकर मूल्य स्पष्टीकरण का तरीका अधिक प्रभावी है बजाय मूल्य शिक्षा के पारम्परिक विधि के। फिर भी सहयोग, श्रम, राष्ट्रीयता और लगन के मूल्यों के लिए दोनों विधियॉ समान रूप से कारगर थी।

गुप्ता, के0 (1984), ''ए कम्पीटीटिव स्टडी ऑफ मोरल वैल्यूज ऑफ दी चिल्ड्रेन ऑफ वर्किंग एण्ड नॉन वर्किंग मदर्सः'', पी–एच0 डी0 थेसिस, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर।

इस अध्ययन का मुख्य लक्ष्य नौकरी पेशा और गैर–नौकरी पेशा माताओं के किशोर लड़के और लड़कियों में नैतिक मूल्यों की तुलना हैं। परिणाम इस आम धारणा के विपरीत थे कि नौकरी पेशा माताएँ व्यस्त होने के कारण बच्चों की देखभाल पर अधिक समय नहीं लगा सकती। इस अध्ययन का निष्कर्ष था कि नौकरी पेशा माताएँ बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास की अपनी जिम्मेदारियों के प्रति अधिक जागरूक हैं।

अधिकारी जी0एस0 और अधिकारी एस0 (1987), ''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्य'', आधुनिक भारतीय शिक्षा 4 (4) 43–47, नई दिल्ली।

इस शोध पत्र में प्रकाश डाला गया है कि मूल्य जन्मजात नहीं होते, अपितु व्यक्ति इसे समाजीकरण और सामाजिक विचारों के आदान–प्रदान से सीखता है। अध्ययन का लक्ष्य शहरी और ग्रामीण छात्रों द्वारा ग्रहीत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन है। इस उद्देश्य से 408 देहाती और 280 शहरी छात्रों को एक मूल्य प्रश्नावली दी गई परिणाम दर्शाते थे कि आदर्शवादी, धार्मिक, कलात्मक, आर्थिक और राजनैतिक मूल्यों में शहरी तथा देहाती छात्रों में ऑकड़ों का महत्वपूर्ण अन्तर है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रतिदर्श के रूप में उच्चतर माध्यमिक स्तर के पॉच विद्यालयों से कक्षा–12 के 100 छात्र–छात्राओं (50 छात्र एवं 50 छात्राएं) का चयन सोद्देश्यात्मक प्रतिदर्श विधि से किया गया है।

अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा डॉ0 काजी गौस आलम एवं डॉ0 रामजी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत मूल्य मापनी पुस्तिका का प्रयोग विद्यार्थियों के मूल्यों को मापने के लिए किया गया है। प्रयुक्त संख्यिकीय वर्तमान शोध के निर्धारित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन के परिणामों को निम्नलिखित तालिका संख्या–1 के द्वारा प्रदर्शित किया गया हैः

तालिका नं0 1
छात्र–छात्राओं के मूल्यों से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं t मान का विवरण

	छात्र			छात्राएं			
मूल्य	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मान
1. सैद्धान्तिक	50	38.32	3.69	50	37.12	3.77	1.62
2. आर्थिक	50	35.12	4.40	50	37.64	4.01	3.03 **
3. सौन्दर्यात्मक	50	34.96	3.60	50	34.40	4.09	0.74
4. सामाजिक	50	34.08	3.18	50	33.44	4.08	1.06
5. राजनैतिक	50	27.28	3.05	50	26.64	3.47	1.01
6. धार्मिक	50	34.76	3.35	50	33.72	4.24	1.38

' 0.05 स्तर पर सार्थक

'' 0.01 स्तर पर सार्थक

98 मुक्तांश के लिए सार्थकता

0.05 = 1.98

0.01 = 2.63

तलिका नं0 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं के सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का टी मान क्रमशः 1.62, 0.74, 1.06, 1.01 एवं 1.38 है जो .05 एवं .01 दोनों स्तरों पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।" स्वीकृत की जाती है। अतः छात्र एवं छात्राओं के सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि छात्र एवं छात्राओं के आर्थिक मूल्य का टी मान 3.03 है जो .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के आर्थिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं होता है।" अस्वीकृत की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि छात्र एवं छात्राओं के आर्थिक मूल्य में सार्थक अन्तर है अर्थात् छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा अधिक आर्थिक मूल्य के प्रति संवेदनशीलता है।

परिणाम, निष्कर्ष एवं शैक्षिक उपादेयता

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों के अध्ययन द्वारा परिणामों से स्पष्ट होता है कि सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में लैंगिक आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जिसका प्रमुख कारण यह हो सकता है कि भारत जैसे लोकतंत्रात्मक देश में संविधान द्वारा लैंगिक आधार पर कोई भेदभाव नही किए जाने का विधान है। आधुनिक दौर में बालक एवं बालिका दोनों को समान सामाजिक परिवेश एवं समान अधिकार प्राप्त है। व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की आकांक्षा रखते हुए दोनों ही सृजनात्मकता की ओर अग्रसर हैं। वर्तमान में बालिकाएं किसी भी क्षेत्र में बालकों से कम नहीं हैं। छात्राओं के आर्थिक मूल्य का स्तर छात्रों की अपेक्षा अधिक है जिसका कारण यह हो सकता है कि बालिकाओं में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता की भावना प्रबल हो रही है और रोजगार के क्षेत्र में बढ़ते अवसर उन्हें सफलता की मंजिल पर पहुॅचने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- चौधरी, डी.एम. (2013). ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ वैल्यूज एण्ड एटीट्यूड ऑफ स्कूल एण्ड कालेज टीचर्स ट्वर्डस टीचिंग प्रोफेशन. इण्टरनेशनल जर्नल फार रिसर्च इन एजुकेशन टवसण् 2 ;1द्ध
- जै, श्री (2010). मूल्य शिक्षण. अंश पब्लिकेशन्स हाउस, दिल्ली।
- जोशी, धनंजय (2006). नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध. कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
- डागर, बी.एस. (1992). शिक्षा और मानव मूल्य. हरियाणा साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण पवन–प्रिन्टर्स जे–9 शादिरा, दिल्ली।
- पाण्डेय, के.पी. (2007). शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी. विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- रूहेला, सत्यपाल (2009). मूल्य शिक्षा : क्या, क्यों, कैसे? अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- रूहेला, सत्यपाल (2010). शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार. अग्रवाल पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण आगरा।
- लोढ़ा, महावीरमल (2008). नैतिक शिक्षा : विविध आयाम. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, तृतीय संस्करण जयपुर।